श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय में "संगठन निर्माण में गीता दर्शन का महत्व एवं इसकी उत्कृष्ठता स्थापित करने में व्यक्ति विशेष का योगदान" विषय पर कार्यशाला का आयोजन

श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय के शिक्षण एवं क्षमता निर्माण कौशल संकाय के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव की निरंतरता के चलते एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय संगठन निर्माण में गीता दर्शन का महत्व एवं इसकी उत्कृष्ठता स्थापित करने में व्यक्ति विशेष का योगदान रहा। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में सामुहिक एवं व्यक्तिगत गतिविधियों का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभागियों ने दैनिक जीवन में गीता से सीख विषय पर अपने अपने विचार रखें एवं कविता, चित्र, निबंध एवं पोस्टर के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को प्रकट किया। मंच संचालन अधिष्ठाता शिक्षण एवं क्षमता निर्माण संकाय से प्रो ऋषिपाल ने किया। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार प्रो आरएस राठौर ने इस दौरान सभी का धन्यवाद किया तथा विश्विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बीते वर्ष 2021 की गतिविधियों के साथ वर्ष 2022 में विश्विद्यालय के सफर से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि यूनिवर्सिटी एक होलिस्टिक शिक्षा देने वाले संस्थान होना चाहिये, जिससे विद्यार्थियों का सम्पूर्ण विकास हो।

कार्यशाला में विश्विद्यालय के कुलपति श्री राज नेहरू ने अपने अनुभव साझा किए एवं बताया कि भगवत गीता एक ऐसी किताब है जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उतर कर उसमें काफी परिवर्तन किये जा सकते हैं। हमारे जीवन की परिस्थितियां मौसम की तरह बदलती है, किसी भी परिस्थिति में हमें अपना काम करते रहना है। हमें अपना हथियार नहीं छोड़ना है। हमारे मन में काफी बार विचार आते हैं मैं ये काम नहीं कर पाऊंगा, गीता हमें हर परिस्थिति से बाहर निकलने का रास्ता दिखती है। सकरात्मक दृष्टिकोण लेकर चलते रहें, परिस्थिति जैसी भी हो, अपने आप ठीक होना शुरू हो जाती हैं। हमें उनसे घबराना नहीं चाहिए। बिना विचलित हुए जो अपने काम को करते हैं समय उसको ठीक कर देता है। आप क्या सोचते हैं, कैसा सोचते हैं, किस प्रकार के विचार रखते हैं, ये आपके जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी देता है। अपने नकारात्मक वाले दिमाग को अपने सकारात्मक दिमाग पर हैवी ना होने दें। ये खुद पर भी निर्भर करता है कि आप किस प्रकार के दिमाग को कंट्रोल में कर सकते हैं। दुर्भाग्य से हम माइंड का प्रयोग नहीं करते, माइंड हमें प्रयोग में लाता है। हमें अपने माइंड को कंट्रोल में रखना चाहिए। हमें जो मिलता है उसमें संतोष करें। जो नहीं मिला उसके लिए हम हमेशा विचलित रहते हैं, जो मिला है उससे संतुष्ट नहीं होते, वह आगे जाकर आपको ज्यादा विचलित करेगा। कभी अपने अंदर झांक कर देखें, आप जो काम कर रहे हैं उससे कई गुना ज्यादा काम कर सकते हैं।

कार्यशाला में ऑनलाइन माध्यम से मुख्यातिथि के रूप में श्रीमान मुकुल कानिटकर, अखिल भारतीय राष्ट्रीय संगठन मंत्री भारतीय शिक्षण मंडल शामिल हुए